पवित्रता का बन्धन ही सच्चा रक्षाबन्धन है

वर्तमान समय स्वभाव से मनुष्य परतंत्र रहना पसन्द नहीं करता है। यदि परतंत्र होता है तो वह स्वतंत्र होना चाहता है। लेकिन रक्षा-बन्धन का पवित्र बन्धन सभी को प्रिय है जिस बन्धन को उत्सव समझकर खुसी से मनाते हैं। वास्तव में यह बन्धन न्यारा और प्यारा बन्धन हैं। इस दिन बहनें, भाईयों को राखी बांधती और मिठाइयों से मुख मीठा कराती है। इस पर भाई भी मन ही मन वचन देते है कि वे भाई का नाता ठीक निभायेंगे।

ज्ञान की दृष्टि से यदि इस पर्व को मनाया जाये तो यह बहुत रहस्य-युक्त ज्ञान-युक्त है। ज्ञानयुक्त मनाने पर मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। पर आज इस पर्व को केवल रीति-रस्म समझ मनाते हैं ।

रक्षाबन्धन के पर्व में बन्धन भी दो प्रकार के हैं। एक तो ईश्वरीय बन्धन या परमार्थिक बन्धन। दूसरा है सांसारिक कर्मो के बन्धन। ईश्वरीय बन्धन में मनुष्य आत्मा दिव्य अलौकिक सुख की प्राप्ति करता है। लोकिन सांसारिक कर्मो के बन्धनों में आत्मा फँसी होने के कारण दुःख की प्राप्ति करती है। विचारवान मनुष्य ईश्वरीय बन्धन चाहते हैं। परन्तु मनुष्य आत्मायें विकारों के बन्धनों से मुक्त होने की युक्ति नहीं जानते हैं।

इसलिए प्रायः सभी नर-नारीयों को गुरू-गुसाई, मन्दिर-गुरुद्वारे आद की शरण लेनी पड़ती हैं। जब गुरू-गुसाई भी इस रहस्य का स्पष्ट नहीं कर पाते कि विकारों पर विजय कैसे पाप्त हो तो विचारे धर्म-कर्म से क्षीण हो बैठते हैं। इसलिए ही सभी रक्षाबन्धन के आध्यात्मिक रहस्य को भुलकर लौकिक रीति-रस्म में फंस गये हैं। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण और उच्चकोटि का है।

रक्षा-बन्धन का आध्यात्मिक रहस्यः-

रक्षा-बन्धन का हमने ऊपर की पंक्तियों में जो भव बताया हैं, उसे समझने से ही इसका महत्व मालुम हो सकता है। यों तो रक्षा-बन्धन रेशम या नायलोन के धागों से बना हुआ या सुत के धागों से मौलि के रूप में उसका महत्व तो बहुत बड़ा बताया गया है। अवश्य ही वह किसी उच्च भाव का प्रतीक होगा।

उदाहरण के तौर पर कमल का फूल कोई अधिक मँहगा नहीं परन्तू उसके गुण को अगर कोई अपने जीवन में धारण कर ले तो उसका जीवन बहुत ही उच्च और पुजनीय बन जाता है। कमल पुष्प तो वास्तव में अलिप्त जीवन का प्रतीक है। जो मनुष्य इस विचार को अपने जीवन में धारण करता है, उसका जीवन आदर्श बन जाता है। इसी तरह गूलाब का फुल भी बहुत सस्ते दामों में मिल जाता है। परन्तु गुलाब की विशेषता यह है कि वह कांटों में रहते हुये भी स्वयं कोमल होता है और अपनी सुगन्धों से दूसरों को खुश करने की सेवा करता है। इसलिये लोग उसकी ओर खिंचे चले जाते हैं।

इसी प्रकार राखी भी कुछ धागों की ही बनी होती है परन्तु उन धागों में जो भाव भरा होता हैं, जिस विचार की वह प्रतीक होती है वह भाव जीवन को बहुत उच्च बनाने वाला होता है। विचार से ही संसार में बड़े-बड़े परिवर्तन होते हैं। मनुष्य किसी उच्च विचार को धारण करके बहुत उन्नति कर सकता है। अतः राखी में जो भाव या अभिप्राय छिपा है वही मुख्य चीज है। उसे धारण करने के लिये प्रेरणा देना ही राखी का मुख्य उद्देश्य है, और उसी कारण ही राखी की सारी महिमा है। यदि उसे कोई छोड़ दे, तब तो राखी बस रूपये-दो रूपये की चीज है।

-: ओम् शान्ति :-